निरक्षर बच्चों की खेल गीतों के माध्यम से खुलती पठन की दुनिया
एक अनुभवपरक सीख

शारदा कुमारी*

हम जानते हैं कि भाषा की रहस्यमयी दुनिया में 'पठन और लेखन' कौशल की प्रभावशीलता पर प्रश्न नहीं उठाया जा सकता। अभिव्यक्ति के वाचिक परंपरा के दौर के बाद अभिव्यक्ति, ज्ञान का सृजन, हस्तांतरण, संरक्षण आदि के लिए पठन-लेखन कौशल के महत्व को नकारा नहीं जा सकता। औपचारिक विद्यालयी व्यवस्था में पठन व लेखन का सीखना-सिखाना वर्णमाला वाले कायदों, प्रवेशिकाओं और पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से होता है, कई बार यह प्रक्रिया इतनी ऊबाऊ और यांत्रिक हो जाती है कि पढ़ना सीखने का चाव ही खत्म हो जाता है। प्रस्तुत लेख बताता है कि पढ़ना सिखाने में बच्चों द्वारा गाए जाने वाले खेल गीत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। खेल गीत बच्चों के दिल के करीब होते हैं, उनकी अपनी दुनिया के होते हैं, सबसे बड़ी बात तो यह है कि चिर-परिचित होते हैं, अतः उनके माध्यम से बच्चों को पठन की तिलस्मी दुनिया में बड़ी आसानी से प्रवेश कराया जा सकता है।

इस दुनिया के किसी भी भूखंड पर पहुँच जाइए, हर जगह सैकड़ों तरह की विविधताएँ होते हुए भी एक बात तो सामान्य रूप से समान ही पाएँगे, वह है बच्चों का खेलना। सूरज की तपिश हलकी हुई नहीं कि बच्चे अपने-अपने कोटरों से ऐसे भागते बाहर आते हैं कि मानों घर के भीतर वे कोई घोर सज़ा काट रहे हों। साँझ के झुरमुटे के घिर आने तक जब तक कि घर से आवाज़ें न आने लग जाएँ, तब तक वापसी का तो सवाल ही नहीं उठता। बच्चों का साँझ होते ही गली, सड़कों, पार्कों, मैदानों आदि में सामूहिक खेल खेलना पूरी दुनिया में समान रूप से देखा जा सकता है।

कुछ बच्चे तो शाम को समूह में खेले जाने वाले खेलों के लिए इतने अधिक उतावले रहते हैं कि धूप ढलने का इंतज़ार उनसे सहन नहीं होता। चेहरा भले ही सूरज की तपिश से सुर्ख हो जाए, पर खेल का रोमांच सिर चढ़कर बोलता है। जिन घरों में पांबदी कुछ अधिक हो, वहाँ वे एक-दूसरे से कुहनी मारकर पूछते हैं कि, "सूरज इत्ते धीमे-धीमे पश्चिम की तरफ़ क्यों जा रहा है।" तो फुसफुसाहट में जवाब मिलता है, "सूरज तो जहाँ था वहीं है। ये हमारी धरती मैया है न इनकी कारस्तानी है सब। हमारे खेलने का समय हो तो इनकी चाल ऐसे ही हो जाती है।" यह भौगोलिक ज्ञान कितना एक-दूसरे के पल्ले पड़ता है, यह तो मालूम नहीं, पर उनके चेहरों पर अपने साथियों तक पहुँचने की बेताबी को आसानी से भाँपा जा सकता है। बच्चों के ये सामूहिक खेल हमारी साझी

**एसोसिएट प्रोफ़ेसर*, मंडल शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, आर.के. पुरम, नयी दिल्ली 110 027

© NCERT not to be republished

सामूहिकता का सजीव उदाहरण हैं और इन खेलों के दौरान सामूहिक रूप से गाए जाने वाले खेल गीत अपने आप में अनूठे हैं।

देश के कोने-कोने में गाए जाने वाले खेल गीतों के कुछ नमूने प्रस्तुत हैं—

हरा समन्दर गोपी चंदर
बोल मेरी मछली कितना पानी?
इतना पानी
पोशम्पा भई पोशम्पा
डाकुओं ने क्या किया
ताला तोड़ा घड़ी चुराई
अब तो जेल में जाना पड़ेगा
जेल की रोटी खानी पड़ेगी
ये आए धप
केकिला छिपाकी जिमे रात आई है
कोड़ा जमाल खाई, पीछे देखी मार खाई
राजा राजा हाँ मेरी परजा
रिंगा रिंगा रोज़ेज
पाकेट फुल ऑफ़ पोज़ेज
वी ऑल फ़ॉल डाउन
छुक छुक छलनी, और कने जा जंगली
डोकी माँ डोकरी माँ का करे है
टिप्पी टिप्पी टॉप
व्हाट कलर डू यू वांट
आई वांट, आई वांट, आई वांट पर्पल।

न जाने कितनी तुकबंदियाँ इन सामूहिक खेलों के साथ जुड़ी हैं। रोमांचित कर देने वाली बात तो यह है कि हिमालय के दुर्गम क्षेत्र में रहने वाले बच्चे हों या मैदानी शहरी इलाकों के बच्चे, ये खेल गीत अपनी क्षेत्रीयता की अनूठी पुट लिए हर जगह मिल जाएँगे।

इन खेल गीतों का आर्विभाव कब हुआ, कहाँ से हुआ और कैसे हुआ, ऐसी जानकारी न तो समाजशास्त्री जुटा पाएँ हैं और न ही भाषा वैज्ञानिक। पर इतना ज़रूर है कि सभी ज्ञानी चाहे वे भाषा के क्षेत्र से हों या बाल विकास, बाल मनोविज्ञान, मानवशास्त्र किसी भी क्षेत्र से क्यों न हों, सबने इन खेल गीतों को बहुत तरजीह दी है।

इन खेल गीतों को सिर्फ़ संस्कृति और सामूहिकता का प्रतीक ही नहीं माना जाता, अपितु बच्चों के सामाजिक, संवेगात्मक और भाषिक विकास के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण भी माना जाता है। सुर, लय व ताल के साथ गाई जाने वाली इन तुकबंदियों में बच्चों ने कभी अर्थ ढूँढ़ने की कोशिश की हो ऐसा किसी भी समाज के इतिहास में नहीं हुआ होगा। फिर भी, बिना प्रयास के कंठस्थ कर लेना और पूरे जोश व आनंद के साथ गाना, यह हर जगह देखने को मिल जाएगा।

अपनी तमाम महत्वपूर्ण उपयोगिताओं के साथ-साथ ये खेल गीत किस तरह से पढ़ना सिखाने का ज़रिया बन सकते हैं, लेखिका ऐसा अनुभव आपके साथ साझा करना चाहती है। संभवतया आपके मन में सवाल उठने लगे कि आज के समय में तो एक से बढ़कर एक रंगीन चित्रों वाली पाठ्यपुस्तकें उपलब्ध हैं, वर्णमाला व बारहखड़ी के आकर्षक चार्ट पेपर हैं और भी तरह-तरह की बच्चों के स्तर की पठनीय सामग्री है तो फिर पढ़ना सिखाने के लिए खेल गीत ही क्यों चुना गया? तो इस प्रश्न का पहला जवाब तो यह है कि 'पढ़ना' सिखाने के लिए यह ज़रूरी नहीं कि हमारे और हर बच्चे के पास पाठ्यपुस्तक हो या कहानी कविताओं की पुस्तकें हों। अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में बच्चे जो भी बोलते

© NCERT not to be republished

हैं, जैसा भी बोलते हैं, उसके आधार पर बच्चों को पढ़ना सिखाया जा सकता है।

मेरी स्मृतियों के जखीरे में कुछ अनुभव ऐसे भी हैं जहाँ प्रशासनिक अव्यवस्था के रहते पाठ्यपुस्तकें समय रहते विद्यालयों में नहीं पहुँच पाईं और इस कारण अध्यापकों ने पढ़ाना ही आरंभ नहीं किया।

बड़ी मायूसी से उत्तर दिया कि कायदे से 'वर्णमाला की पुस्तक पढ़ाना तो वर्जित है, पाठ्यपुस्तकें अभी आई नहीं हैं, ऐसे में पढ़ना कैसे सिखाऊँ? बस घेर के बैठे हैं बच्चों को। खेलकूद करा लेते हैं। कुछ गा बजा लेते हैं। वैसे, यह तो अच्छा ही है कि बच्चों को खेलकूद व गाने-बजाने के तो मौके मिल ही गए इस बहाने।'

कुछ साथियों को यह बात बहुत ही अटपटी लगी कि बच्चों द्वारा बोली गई बातें भी 'पढ़ना' सिखाने का माध्यम बन सकती हैं। उनका तर्क यह है कि बच्चे तो बेतुकी भाषा बोलते हैं, अपनी घरेलू भाषा में बोलते हैं, उनकी भाषा व्याकरण सम्मत भी नहीं होती तो उसे कक्षा में पढ़ना सिखाने के लिए इस्तेमाल करना क्या नैतिक दृष्टि से गलत नहीं होगा?

उनके इस तर्क के पीछे क्या उदाहरण हैं, तो उन साथियों ने अपने बच्चों द्वारा कही जाने वाली कुछ बातें बताईं, "हमारे घर के धोरे गूल है न थोरी पक्की थोरी कच्ची। बामे एक दिनो पानी आवे और एक दिन सूखो राहे। तो जे दिना पानी ओ तोही हम नहाय धोय के आवे।" यह टिप्पणी अध्यापक के उस प्रश्न के उत्तर में थी जब उस कक्षा के बच्चों से पूछा गया कि कौन-कौन से बच्चे रोज़ नहाकर आते हैं?

एक और उदाहरण, "दाज्यु बोल्या हू तू बोझ-होझ नी सारणा। कांधा उचक उचक पीरा देवे छे।"

यह टिप्पणी अध्यापक के इस प्रश्न के सदंर्भ में आई कि कौन-कौन से बच्चे घर में अपने बड़ों के काम में मदद करते हैं।

एक और उदाहरण, "सर जी! जे जब्बर-जब्बर झबरीले से डॉगी। एक नहीं दो नहीं पूरे-पूरे जीन और एकदम घनेरी रात। मोपो तो कुछ सूझा ही नही बस दे धड़ाम उन डागिन के उपर चढ़ गयौ।"

संदर्भ कुछ ऐसा था कि बच्चे के आँख-कान गाल सूजे हुए थे। यह सब कैसे हुआ, इसके उत्तर में उपर्युक्त बात कही गई। और भी बहुत-सी बातें अध्यापकों ने बताईं।

लेखिका को सबसे बड़ी खुशी तो इस बात पर हुई कि हमारे इन अध्यापक साथियों ने न केवल बच्चों को उनकी भाषा में बोलने के मौके दिए, बल्कि बहुत ही संजीदगी के साथ सुना भी। क्योंकि उन्होंने सुना नहीं होता तो हूबहू कैसे बता पाते?

हाँ, इस बात पर ताज्जुब ज़रूर हुआ कि उन्हें बच्चों की ये बातें बेतुकी क्यों लगी? उन्हें इन वाक्यों में व्याकरण का अभाव क्यों नज़र आया? उनके अनुसार बेतुका लगने का सबसे बड़ा कारण यह था कि उनकी भाषा पाठ्यपुस्तक की भाषा से कहीं भी मेल नहीं खाती यानी कि ये मुख्यधारा में बोली जाने वाली भाषा नहीं है। व्याकरण सम्मत न होने की बात पर उन्होंने तर्क दिया कि वाक्य संरचना ठीक नहीं है, शब्द सही स्थान पर नही हैं, कर्ता से पहले क्रिया आ गई आदि।

साथियों! आप भी बच्चों की भाषा पर अपने विचार बताएँ। लेखिका का मानना है कि बच्चे निर्भीकता व आत्मविश्वास के साथ अपनी बात कह पा रहे हैं तो इससे बड़ी और क्या बात हो सकती है। रही बात बेतुकेपन और अटपटी वाक्य संरचना की

© NCERT not to be republished

तो हम सभी जानते हैं कि भाषा के लिखित और मौखिक स्वरूप में अंतर होता है।

उदाहरण के तौर पर, यदि मुझे अपने किसी साथी से उसके कहीं जाने के बारे में पूछना है तो मैं कह सकती हूँ, "जा रहे थे क्या कहीं?" पर इसी वाक्य का लिखित स्वरूप होगा। "क्या आप कहीं जा रहे थे?" बोलचाल की भाषा में कर्ता, कर्म, कारक, क्रिया, ये सब व्याकरणिक तत्व इधर-उधर हो ही जाते हैं चाहे बच्चे बोलें या वयस्क। इस आधार पर हम बच्चों की भाषा को बेतुकी, आधारहीन, गैर व्यारकण सम्मत नहीं ठहरा सकते।

उनकी भाषा तथा उनके द्वारा कही गई बातों को पढ़ना सिखाने का माध्यम बनाया जा सकता है और बनाया भी जाना चाहिए। इसके पीछे सबसे बड़ा तर्क है कि बच्चे यह समझ बना सकें कि जो बोला जाता है, वह लिखा भी जा सकता है। हमारे देश में बच्चे ही नहीं, अपितु वयस्कों की भी एक बहुत बड़ी संख्या है जो इस बात पर अचंभा करती है कि उनके द्वारा बोली गई बातें, लिखी भी जा सकती हैं।

लेखिका खेल गीत के माध्यम से पढ़ना सिखाने की शुरुआत का अनुभव साझा करती है। यह अनुभव देश की राजधानी दिल्ली के दक्षिण-पश्चिम ज़िले की एक बस्ती का है जिसे कंजड़ बस्ती के नाम से जाना जाता है। जहाँ एक तरफ़ कनाट प्लेस देखने से देश की समृद्धि, आधुनिक और प्रगतिशील होने का भाव मिलता है तो इस बस्ती को देखकर अपनी दरिद्रता, फटेहाली और पिछड़ेपन का संज्ञान होता है। इस बस्ती में रहने वाले सभी परिवार घुमन्तू समुदायों से हैं। आज की तारीख में भी इनका मुख्य पेशा विवाह जैसे अवसरों पर ढोल बजाना है। इसी समुदाय के बच्चों की दिनचर्या समीपस्थ बस्ती नॉगल राया के मुख्य बाज़ार में कूड़ा-करकट बीनने से आरंभ हो जाती है। सुबह छह बजे से लगभग 11 बजे तक कूड़ा बीनना, समीप के सामुदायिक केंद्र के पास उसका ढेर लगाना, फिर घर या भण्डारे जहाँ से भी भोजन का प्रबंध हो, भोजन करके सोना, खेलना-कूदना, टेलीविज़न देखना— यही सब इन बच्चों की दिनचर्या थी।

निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार, 2009 के लागू होने के पूरे छह वर्ष बाद यह संज्ञान में आया कि इस बस्ती के लोगों व बच्चों के लिए स्कूल नाम की संस्था कोई भी मायने नहीं रखती है। दाखिला अभियान, दाखिला उत्सव, जागरूकता शिविर जैसे सशक्त अभियानों व कार्यक्रमों ने भी इन लोगों के आगे हार मान ली। इन सभी का यह मानना था कि, "सकूल जाके भी जिनगी जूं तो रैवे फिर टाबरा मोडी मोटी कमाई कर लावे कचरा बीड-बाड के तो तुम सब के पेट मरोड क्यों उठें, मेनत मजूरी करके जिनगी की रेल चलावे। सकूल में कुछ न धरा।" इस बस्ती के बच्चों को पढ़ना-लिखना सिखाने की ज़िम्मेदारी लेखिका को दी गई।

लेखिका बताती है कि उन बच्चों द्वारा गाए जाने वाले खेल गीत से पढ़ना-सीखना कैसे हो पाया।

यदि आपके ज़हन में यह सवाल उपज रहा हो कि पाठ्यपुस्तकें नहीं थीं क्या? तो शुरू में ही बताना ठीक है कि कॉपी, पेंसिल, स्लेटें, कैलेण्डरनुमा श्यामपट्ट, चॉक, चार्ट पेपर और रिमझिम सभी कुछ था। जिस तरह के समूह से लेखिका का सामना हो रहा था, वह वायगोत्सकी, फ्रीबेल, ब्रूनर या फिर पियाजे, सभी के सिद्धांतों के परखच्चे उतारने पर तुला था।

© NCERT not to be republished

उसके सामने लगभग चार वर्ष से आठ वर्ष तक की आयु के लड़के थे। बस्ती में लड़कियाँ भी थीं, पर समुदाय की तरफ़ से अभी उन्हें अपनी कक्षा में शामिल करने की अनुमति नहीं मिली थी।

उन बच्चों को कुछ अपने से सीखे बालगीत सुनाए और कुछ उनके गीत सुने। उनका एक गीत था—

आमलेट, सड़क पे लेट, आई मोटर फट गया पेट
मोटर का नंबर एटीएट, मोटर का मालिक चंदू सेठ
चंदू सेठ ने मारी लात, वहां पे बन गई कुतुब मीनार
कुतुब मीनार से आई आवाज, चाचा नेहरू जिन्दाबाद

वीट वीट जय हिन्द, मधुबाला गरम मसाला
सब्जी में डाला पड़ गया काला, सीता गोरी रावण काला

उसको ले गया मूछों वाला, सबकी हिम्मत पर पड़ गया ताला

यह गीत सभी ने बहुत ही तन्मयता के साथ गाया। उन्होंने बताया कि शाम को जब वे रेल पटरी पर खेलते हैं चिक्कन पो, तो यही गीत गाते हैं।

इस कोरस का सभी ने जमकर मज़ा लिया और समाप्ति पर ज़बरदस्त ठहाके लगाए।

ठहाकों की आवाज़ जैसे ही थोड़ी मद्धिम हुई, लेखिका ने आधे-अधूरे आत्मविश्वास के साथ कहा— साथियो, कितना सुंदर गीत है न ये, क्या तुम इसे लिखवा सकते हो? लेखिका के इस प्रश्न पर जो सन्नाटा छाया उसे बयां करने के लिए लेखिका इतना भर कह सकती है कि वहाँ पुराने ज़माने की कहानियों में वर्णित, 'जंगल की नीरवता' का सा माहौल उत्पन्न हो गया था। लेखिका भी अचकचा गई थी कि भला उसने ऐसा क्या कह दिया, यह तो भला हो प्रहलाद का जिसने सन्नाटे से उबारा। उसने बहुत ही सशंकित होकर पूछा— दीदी! जे बाले गाने को लिखने की बात है क्या?

'हाँ, हाँ,... यही आमलेट वाला जो अभी तुम सबने गाया।'

इस बात पर लेखिका का मज़ाक बनाने वाली समवेत हँसी शुरू हो गई।

उन बच्चों का यह मानना था कि, "हम जैसे खच्चड़ लोगों की बातें भी लिखी जा सकती हैं, यह संभव नहीं। बड़े लोगों की, ऋषि-मुनि लोगों की बातें ही लिखी जा सकती हैं।" लेखिका के लिए इस बात की कल्पना भी करना मुश्किल था कि इक्कीसवीं सदी के भारत के बहुत-से बच्चे इस बात से अनजान हैं कि जो कुछ भी बोला जाता है, वह लिखा जा सकता है। आमजन की कही गई बातें तथा खासकर के मुँह से निकली बातें सभी लिखी या छापी जा सकती हैं।

'हाथ कंगन को आरसी क्या', अपने इन विद्यार्थियों के संशय को दूर करने के लिए पास ही रखे चार्ट पेपर से मार्कर उठा, लेखिका ने लिखने का उपक्रम किया। लेखिका को बस पहला ही शब्द याद था। 'आमलेट' उसने भारी भरकम आवाज़ में उन्हीं के अंदाज में गाया— 'आमलेट' और आवाज़ के साथ-साथ लिखती गई 'आमलेट'। उसका बोलना और साथ-साथ उसी शब्द को लिखना इन सब बच्चों के लिए बहुत बड़ा अजूबा था। लेखिका फ़र्श पर बैठी झुककर लिख रही थी और चारों तरफ़ से बच्चे उसे घेरकर उसे लिखते हुए देख रहे थे। वे अभी भी शंका में थे कि लेखिका ने 'आमलेट' ही लिखा है या कुछ और चूँकि लेखिका को आगे की पंक्तियाँ याद नहीं थी इसलिए चार्ट पेपर पर झुके-झुके ही बोली, "हाँ भई,

© NCERT not to be republished

आगे नहीं लिखवाओगे क्या? बोलोगे तभी न लिख पाउँगी मैं।" अब तक लेखिका जान चुकी थी कि इस समूह में किन-किन की चलती है यानी कि कौन लीडर है, सो उन्हीं तीन-चार लीडरनुमा बच्चों को देखते हुए, उसने संकेत दिया कि आप आगे गाएँगे तो उसी के सहारे ये लेखनी आगे बढ़ेगी।

वे तीनों-चारों एक-दूसरे को कनखियों से देखने लगे। उनमें से एक ने कहा—

"आप हमें...; (असंसदीय शब्द) तो नहीं बना रहीं? उनका आशय यह था कि लेखिका उन्हें बेवकूफ़ तो नहीं बना रही है।

लेखिका ने उन्हें यकीन दिलाया कि इस दुनिया के हर व्यक्ति द्वारा कही बात लिखी जा सकती है। अब पुनः उसी बच्चे ने संशकित भाव से पूछा— "मतबल कि हम सब जो कुछ कहते सुनते हैं वो सबका सब लिख सकते हैं और लिख सकते हैं तो पढ़ा भी जाएगा न।'' दुरूस्त, एकदम दुरूस्त। सभी कुछ लिखा-पढ़ा जा सकता है। थोड़ी देर के सन्नाटे के बाद, उसी बच्चे पुत्तन ने प्रौढ़ता भरे अंदाज़ में कहा— "चलो, अगर तुम कहती हो तो मान लेते हैं, चलो लिखो'' और पुत्तन के साथ-साथ बाकी ने भी बोलना शुरू किया— "आमलेट, सड़क पे लेट..."

उनके बोलने की गति के मुताबिक लेखिका की लिखने की गति धीमी थी, फिर वे इतना चीख-चीख कर गा रहे थे कि लेखिका शब्द पकड़ ही नहीं पा रही थी। उसने लिखना रोककर, थोड़ा खीझ के साथ कहा— "अपनी स्पीड तो कम करो भई। इतना जल्दी हाथ चलता है क्या!"

उसका इतना भर कहना था कि अपनी जांघों पर हाथ मारते हुए पुत्तन ने कहा — "हो गई सिट्टी पिट्टी गुम। मे के रिया था कि आप फालतू का ड्रामा कर रही हो।"

इससे पहले कि पुत्तन के संकेत पर बच्चों की जमात उठे, उसने उन्हें हल्के से गुस्से के अंदाज में फिर से समझाया और अपना गीत धीमी गति से गाने के लिए लगभग अनुनय किया।

अब फिर से लिखना शुरू हुआ। छठी पंक्ति के समाप्त होते ही पुत्तन व गोकुल ने सबको रोका और तीसरी पंक्ति पर हाथ रखकर कहा— "जे बोल के दिखाओ। का है जो?" लेखिका ने पढ़कर सुनाया— "आई मोटर फट गया पेट।" इस पंक्ति के बाद जो भाव बच्चों के चेहरों पर आए, उन्हें शब्दों में बयाँ करना मुश्किल है। वे सब के सब विस्फारित नेत्रों से लेखिका की ओर और चार्ट पेपर पर लिखी पंक्तियों की ओर देख रहे थे।

आश्चर्य और आशंकाओं के माहौल में गीत किसी तरह से पूरा हुआ और अब इस गीत के ज़रिये पढ़ना सिखाने की बारी आई। लेखिका ने दूसरा चार्टपेपर उठाया और बच्चों को संबोधित करते हुए कहा कि आपके इस गीत का पहला शब्द मैं इस पर लिख रही हूँ। आप ध्यान से देखें। उसने आमलेट शब्द को 'साइट शब्द' बनाया और जैसे-जैसे बोलती, वैसे-वैसे उन्हीं वर्णों पर अंगुली रखती। फिर सबसे बुलवाया 'आमलेट'। उसने ये ध्यान रखा कि उनकी आवाज़ और उसका संकेत मेल खाएँ। बच्चों का ध्यान आवाज़ और वर्ण के चित्र पर दिलाया। लेखिका बोले जाने वाली आवाज़ और उसके चित्र (वर्ण की बनावट) पर ध्यान दिला रही थी।

इसके बाद उसने 'दूसरे चार्ट पर' पर 'आ' वाले शब्द लिखे— जैसे

आधा	आटा	आपका	आम
आठ	आफ़त	आदत	आरती
आढ़तिया	आराम	आगे	आना

© NCERT not to be republished

बच्चों से पूछा कि, 'आमलेट' की कौन-सी तसवीर इन शब्दों में नज़र आ रही है। उसका उद्देश्य 'आ' सिखाना था। बच्चों ने थोड़े से समय में ही हर शब्द के 'आ' पर गोला लगाया और हर्ष का विषय था कि आम शब्द पर तो पूरा-पूरा गोला लगाया और इस शब्द को बोलते-पढ़ते समय असीम सुख और अचरज की अनुभूति उनके चेहरे पर देखी जा सकती थी। लेखिका कक्षा समाप्त करना चाह रही थी पर बच्चों के आग्रह पर दूसरा शब्द लिया गया—

मन	मटर	मकड़ी	नमक
अमरूद	परमजीत	मौसम	मटकी

पहले वाली प्रक्रिया दोहराई गई। इस बार 'परमजीत' के 'म' पर ध्यान देर से गया, परंतु बाकी शब्दों के 'म', यहाँ तक के 'मौसम' के 'म' पर ध्यान गया और उसके लिए चनुआ का सवाल था कि, "यहाँ पर मा ने छतरी क्यों तान रखी है?'' इस तरह से 'आमलेट' में आने वाले सभी वर्णों के साथ काम किया गया। यद्यपि लेखिका उन बच्चों को आमलेट लिखवाना भी चाह रही थी पर सभी का ध्यान आकृतियों की पहचान करने में अधिक था।

अगले दिन का दृश्य परीकथाओं के सुखद अंजाम जैसा था। पिछले दिन के चार्ट पेपर को देख-देखकर बोलने-पढ़ने का काम चल रहा था। लेखिका ने पिछली कक्षा की युक्ति के स्थान पर पूरी की पूरी पंक्ति को आधार बनाया —

आमलेट, सड़क पे लेट
आ गई मोटर फट गया पेट

लेखिका हर शब्द पर अंगुली रखते हुए बोलती जा रही थी और चार बार ऐसा करने के बाद बच्चों से भी बुलवाया। इसके बाद आम, सड़क, लेट, फट, पेट इन शब्दों की पहचान अलग से करवाई। इस काम में लगभग तीन घंटे लग गए थे। लेखिका आगे की युक्ति सोच कर नहीं आई थी। उसने तुरंत कविता की पहली दो पंक्तियों को आधार बनाते हुए मोटे-मोटे अक्षरों में लिखा —

'एक सड़क थी।
सड़क पे मोटर आई।
न जाने कैसे मोटर का टायर फट गया।
चनुआ मोटर चला रहा था।
चनुआ मोटर से उतरा। पेट के बल लेट कर टायर चेक किया।'

उसने यह सामग्री बच्चों के आगे की और पूछा कि क्या इसे पढ़ना चाहोगे?

एक आवाज़ आई — "हमारे गाने का क्या हुआ?"

दूसरी आवाज़ — "इतना मज़ा आ रहा था। काहे का भौकाल मचा रखा है?"

तीसरी आवाज़— "अरे! इसमें आमलेट तो है ही नहीं वह कहाँ गया?"

चौथी आवाज़ — 'लगभग चार्ट पेपर पर गिरते हुए', "देख—देख ये 'सड़क' लिखा है बे ...."

(गाली) ये कहाँ से आ गई।

जिस तरह से उनके गीत को पढ़कर 'प्रत्येक शब्द पर उंगली रखते हुए' सुनाया गया था, ठीक उसी तरह यह टुकड़ा भी सुनाया गया। मुझे अपने आप में गुदगुदी-सी हो रही थी कि बच्चे अधिकांश शब्दों को स्वयं पहचान पा रहे थे। इस छोटे से अनुच्छेद में 'चनुआ' नाम आते ही लगभग सभी बच्चे उछलने लगे और आवाज़ें आने लगीं—

"ओय होय चनुआ उस्ताद। मोटर चलाएगा?
ये मोटर चलायेगा तो टायर फुस्स ही होएगा।
आपने 'चनुआ' से क्यों चलवाई मोटर।
हमारा नाम भी लिखो, हमारा नाम भी लिखो।"

© NCERT not to be republished

तो साथियों, उस अनुच्छेद से चनुआ का नाम हटाना ही पड़ा। किसी भी तरह के द्वंद्व से बचने के लिए लेखिका ने वहाँ अपना नाम लिख दिया और एक अलग चार्ट पेपर पर सबके नाम मोटे-मोटे अक्षरों में लिखे गए। अब सबका कहना था कि पहले अपने नाम लिखना सीखेंगे, उसके बाद आमलेट वाला गीत सीखेंगे।

साथियो, इस तरह से बच्चों के इस अजब से गीत के ज़रिए पूरी टोली ने पढ़ने की दुनिया में प्रवेश किया। कहीं हमारी टोली बिदक न जाए, इस डर से पाठ्यपुस्तक से भी पढ़ाना शुरू कर दिया, पर जो आनंद रस शुरुआती दिनों में आ रहा था, वह अवर्णनीय है।

© NCERT not to be republished